प्रेस विज्ञप्ति

गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
पन्तनगर, जिला– ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड)

इन्डस्ट्री स्टार्टअप एकेडेमिया इंटरफेस–2023 का आयोजन

पन्तनगर। 23 जून 2023। विश्वविद्यालय के आई.डी.पी–नाहेप द्वारा इन्डस्ट्री स्टार्टअप एकेडेमिया इंटरफेस–2023 (आई.एस.ए.आई.–2023) का आयोजन आज गांधी हाल में किया गया, जिसमें मुख्य अतिथि उपमहानिदेशक (कृषि शिक्षा), भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली एवं राष्ट्रीय निदेशक नाहेप डा. आर.सी. अग्रवाल के साथ विश्वविद्यालय के कुलपति डा. मनमोहन सिंह चौहान; राष्ट्रीय समन्वयक आई.डी.पी. –नाहेप, डा. एन.के. जैन तथा पी.आई., आईडीपी–नाहेप एवं अधिष्ठाता कृषि डा. एस.के. कश्यप मंचासीन थे। कार्यक्रम का शुभारम्भ दीप प्रज्ज्वलन के साथ किया गया। इस इंटर्नशिप मेले में देश भर से 45 से अधिक विशिष्ट उद्योगों के प्रतिनिधि उपस्थित थे। इस प्रकार की पहल विश्वविद्यालय में प्रथम बार की जा रही है, जिससे कि छात्रों को ग्रीष्मकालीन अवकाश के दौरान उनको विभिन्न उद्योगघरानों में तकनीकी जानकारी प्राप्त हो सके।

अपने संबोधन में मुख्य अतिथि डा. अग्रवाल ने बताया कि विश्वविद्यालय को देश के कृषि एवं एलाइड विषय में एनआईआरएफ में 7वीं रैंक और क्यूएस रैंकिंग में पहला स्थान प्राप्त हुआ है जोकि गर्व की बात है। उन्होंने बताया कि आई.डी.पी.–नाहेप के द्वारा कृषि स्नातकों को विश्व के विभिन्न देशों में प्रशिक्षण हेतु भेजा जा रहा है जिसका पूरा व्यय आई.डी.पी.–नाहेप द्वारा वहन किया जा रहा है, यह विद्यार्थियों के शैक्षणिक विकास के साथ–साथ उनके व्यक्तित्व विकास के लिए एक अभूतपूर्व पहल है। इस प्रकार की पहल से देश में विद्यार्थियों में कृषि शिक्षा के क्षेत्र में पर्याप्त रूचि बढ़ी है जोकि इस बात से स्पष्ट है कि देश के 74 कृषि विश्वविद्यालयों में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के लिए 3500 सीटों के लिए वर्ष 2021–22 में कुल 84,000 हजार आवेदन प्राप्त हुए थे और इस वर्ष इसमें अभूतपूर्व वृद्धि के साथ कुल 5,84000 आवेदन प्राप्त हुए हैं। कृषि शिक्षा में पिछले 10 वर्षों में छात्राओं की भागीदारी 23 प्रतिशत से बढ़कर 49 प्रतिशत हो गयी है। भविष्य में कृषि शिक्षा में आधुनिक तकनीकें यथा आर्टिफिसिएल इंटेलीजेंस (ए.आई.), रोबोटिक्स, ड्रोन आदि रोजगारपरक होंगे। उन्होंने बताया कि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के महानिदेशक उद्योग, विश्वविद्यालय के लिंकेज को बहुत प्रोत्साहित करते है और यहां पर कुछ उद्योगों के प्रतिनिधियों ने शोध हेतु विद्यार्थियों को फैलोशिप प्रदान करने की बात कही जोकि बहुत ही सराहनीय है।

कुलपति डा. मनमोहन सिंह चौहान ने अपने उद्बोधन में 'तीन पी' यथा प्रोडक्ट, पेटेन्ट एवं पब्लिकेशन के ऊपर बल दिया और कहा कि कृषि विश्वविद्यालयों के लिए जहां प्रोडक्ट सर्वोपरि है वहीं परम्परागत विश्वविद्यालयों में पब्लिकेशन को अधिक महत्व दिया जाता है। उनके द्वारा नेशनल डेयरी इस्टीट्यूट, करनाल में विकसित 89 तकनीकों और उन सभी के व्यावसायीकरण की बात कही गयी। उन्होंने कहा कि देश खाद्यान्न उत्पादन में स्वावलम्बी हो गया है परन्तु 10 से 15 प्रतिशत कटाई उपरांत हो रहा नुकसान एक चिंता का विषय है। प्रसंस्करण उद्योगों को बढ़ाने की आवश्यकता है। देश में लोग पौष्टिक भोजन के प्रति जागरूक हो गये है, इसलिए इस प्रकार की किस्मों का विकास आवश्यक है। विश्वविद्यालय के विद्यार्थी शैक्षणिक स्तर पर अच्छे है परन्तु उनको उद्योगों में चल रहे कार्यक्रमों के प्रति जागरूकता आवश्यक है। उनके द्वारा उद्योगों से उनके सी.एस.आर. कार्यक्रम के अंतर्गत विश्वविद्यालयों को सहायता पहुंचाने और विश्वविद्यालय के एल्यूमिनाई से नवाचार शोधों को आगे बढ़ाने हेतु यथासम्भव सहयोग करने हेतु आह्वान किया गया।

डा. एन.के. जैन ने विभिन्न आंकड़ों के माध्यम से कृषि का भारतवासियों के लिए आत्मनिर्भर रहने में महत्व बताया। आई.डी.पी. –नाहेप के अंतर्गत अंतर्राष्ट्रीय छात्र विनिमय कार्यक्रम की भूमिका पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने बताया कि इसका छात्रों के व्यक्तित्व पर बहुत ही धनात्मक प्रभाव है। उन्होंने बताया कि भारत विश्व के 8 प्रतिशत वैश्विक खाद्य मांग को पूरा करता है। कृषि का देश की जीडीपी में 18.3 प्रतिशत योगदान है। बदलते जलवायु की चुनौतियों का सामना करने के लिए कृषि विधियों में सामयिक परिवर्तन की आवश्यकता है।

कार्यक्रम का संचालन डा. एस.के. कश्यप ने किया तथा उन्होंने कार्यक्रम की रूप–रेखा बतायी। उन्होंने बताया कि यह कार्यक्रम विद्यार्थियों के लिए रोजगारपरक तथा लाभदायक सिद्ध होगा। इस कार्यक्रम में देश के विभिन्न उद्योगों एवं संस्थानों के प्रतिनिधि प्रतिभाग कर रहे हैं जिससे विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर विद्यार्थियों को सेवायोजन के तहत विभिन्न उद्योगों में प्रशिक्षण एवं रोजगार प्राप्त हो सकेगा। कार्यक्रम के प्रारम्भ में प्रतिभाग कर रहे सभी प्रतिनिधियों ने अपना परिचय दिया। उन्होंने बताया कि आई.डी.पी.–नाहेप के अंर्तगत विश्वविद्यालय के 40 विद्यार्थियों को विदेश के कई प्रतिष्ठित संस्थानों में भेजा जा चुका है और 80 विद्यार्थियों को शीघ्र ही भेजा जाना है। विद्यार्थियों द्वारा सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया गया। इस कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के सभी अधिष्ठाता, निदेशकगण, संकाय सदस्य एवं विद्यार्थी उपस्थित थे।

कार्यक्रम में संबोधित करते उपमहानिदेशक (कृषि शिक्षा), भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली एवं राष्ट्रीय निदेशक नाहेप डा. आर.सी. अग्रवाल।